

व
य
रि
ली
न

17064
23.8.14



वेबसाइट
राजेश्वर झा
बिहार लिखने सोसायटी, पटना

पटना-८००००९

मैथिली साहित्य संस्थान

पटना-८००००९

अ
प
रि
णी
ता

Dr. Shiva Kumar Mishra
Ph. D (Cat)
Bihar Revue of Society
Mandir Building, Patna

Shiva Kumar Mishra

17064
23-5-15



लेखक
राजेश्वर झा
विद्या विमलानन्द, पटना

मैथिली साहित्य संस्थान

पटना-८०० ००१

१ सप्टम्बर, १९७६

पुत्रक :

कामेश्वर प्रसाद

कालिका प्रेस,

नारसिंहापुर रोड, पटना-४

मुख्य : श्रीग दाका बाबू

प्रकाशक :

मैथिली साहित्य संस्थान,

छात्र-विहार रिसर्च प्रोफासरी,

पटना-८००००८

प्राक्कथन

अर्द्धशताब्दी तक मुख्य साधिका महिला ने तो चर, रसना, धार, रसना एवं जोत से युक्त नादी वक्त या ने जीवन स्वी नदित्यदि। जो समग्र बुद्धि और उच्चतर मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्व अंगति वक्त के अंगर अधिकाएण जीवन और उच्चत पीवन के उत्तर, उच्चत मान एवं चरक कथाए हाताए के कुरति मक्त से जीवन के गेहो समीपक। ओकरा से तें गतिहासिक तत्त्वक आधार धेक जाने बाप्तनिवले तें कोमल एव सम्बन्ध। ओकर पुनरुक्त आधार केवल हसर कल्पना थिक जकरा नाम-दान से कोमो एव परोकार नहि भेन।

परिवर्तने तें मान्य थिक बा उत्तरे तें तें पुखी और तथा खुबे या चान इति-दिन वर्तत अब वर्तत अधि के संसार मे अतिशय परिवर्तन मनेछ तथा प्रकृति के गतिशील कर्तव्य अधि जकरा अंगति तें सम्बन्ध तें बाओल बाइछ किन्तु समाजक परम्परा से वर्तत नियम, विधि या विवेक के उत्पन्न करे सम्बन्ध जीवन-मानक प्रकृति के अंगतिशीलताक कोरा देन समीचीन नहि भए एकर सम्बन्ध विभुद कलाचारिता से अधि जकरा मानपी किलीय कहल जाइछ।

अनक राग और विराग निरर्गक छोड़ी थिक जे जमाना सेतना के अनिष्ट दिनि प्रचुर करेन तथा अधीष्ट मुख्य अधिष्ट दिना से बाबनाके अंगरित देना से इति करेन अधि। ई दुह विषय तथा जानि, सुख और समताक बाधक थिक। एहि दुह तें नुक बाधना जीव, पीह और समताक रजोपुत भए विधि, नियम और निषेध तें प्रमक मए मन, नियम और संयम के एवनि उच्चत कलाक दिशि अग्रसर होइछ जकरा किन्तु अंगतिक रक्षा नहि देन जाए सकैछ। अचरित परम्पराक विशेषक प्रकृति भएनि मनविशीलताक बलीक थिक किन्तु जो गतिपक्षा और नीति-नृणाक मन्त्रन जर्मन करैछ तें ओ अंगतिशीलता नहि भए जलाचारिता नए जाइछ।

मानः केवल जादू के जोक ईश्वर के भक्तता में झोलाइत मिलते हैं वसि
किन्तु जो अनुभवक कोनो क्षीय पर साकार भवन बँडल जोकरा महि समस्तित होइत ।
जो तें एहि प्रकृतिक विभिन्न रूप में समान भवित । जो बततु पंचा में तें बततु पंचक में,
काहु कल में तें बततु कल में, काहु धन में तें बततु धन में आ काहु बहुर में तें बततु
जोहु में संत और स्वाभक्त रूप में एकहि सत्ताक दुई भेद—स्त्री और पुत्रक रूप में
दृष्टिगोचर होइत । बततुः स्त्री वा पुत्रक बहुरक विराट कणक साकार प्रतीक चिक
के कार्यक माध्यम तें जगतक सूचन करैत भवित । ई दुनु जीवन रूपक दुई गोट गहिमा
चिक जोकरा पर जीवन निर्भर होइत ।

सुख-दुःख प्रगल्भर्तें जीवन चिक । बततु सम रहैत, जस भेद भेद
तें बाँझिषी रहैत भवित । बततु गुण रहैत जोताहि तें भरती रहैत । सुख-दुःख में कर्मः
कालक कल करिक्ता भगवत रहैत बकार निर्मात स्वतः अनुभवक कर्म चिक । जो
जाहि ब्रह्म के रोपित भवित जोकरा जोहि ब्रह्मक लल प्राप्त होइत सक । जतः जे सुखक
आमलभ भवित कए दुःखक पर दृष्टिगत महि करैत जोकरहि तें निष्काम आनन्द
प्राप्त होइत तथा जगतक इन्द्रिय और मन वनासक्त भए भवत विपत्ति में पहुँचैत भवित
तत्त्वतहि तें सुख-सिरण सत निष्कलुष होइत चिक कल कल कल में उतरैत भवित ।
बततु कर्महीन रूप में कर्मक कल के त्यागि बुद्धि और विवेक तें मुक्त भए
निष्काम कर्म के करैत भवित ओएहि तें निरापद मोक्ष के प्राप्त करैत भवित ।

प्रकृतिक कल-कल में परमेश्वरक सत्ता बसाएत रहैत जे परमेश्वरक
मोन में, सत्त्वक गर्जन में, गर्जेक रूप में तथा नवीयणनक श्रुति में प्रतिभासित
होइत तथा ब्रह्मक कल-कल में, नवीयणन, कल, कल आदि सभ तें परमेश्वरक
साकार रूप चिक । तदर्थ, प्रकृति और पुत्र परस्पर भिन्न वसि भए एकहि सत्ताक
दुई रूप चिक जे नर और मातृक रूप में जगत कल-कल और आचरण से समुक्त
सत्ताक अनुभवक कल-कल निर्मित ब्रह्मक पर लगेत भवित तथा जगत सुकर्म और
सुकर्मक द्वारा सुख-दुःख के जगत जीवनहि में प्राप्त कए पुनः जोहि सत्ता में लीन
भए जाइत भवित ।

अपरिणीतान नाशिक अहिष्कारक जीवन, जीवन और आचरण जगत्क तत्त्वहि
पर निर्भर बल जे सुखक विधि तें जीवन किन्तु जो अहिंसा दीर्घक धन सुख अहिंसा
जोकरा पाछा जोहि प्रकृतिक कार्यक । जोकरा जीवन, रूप आ स्वच्छन्द विचार
जगतक जगत गौरव बनाए जो सुखक स्वर्ग पर पहुँचैत किन्तु जोहि जे जे
सम बततु तें समझैत धन जे जोकर अनाधुन जीवनक बँगाहि बल देत ।

रामायण ओहि पुण्य का प्रतीक धिक् अकार दीर्घ, वापीयं और व्यक्तित्व से पर्यंत सब और रहित किन्तु पुण्य का प्रतीक सामान्य के प्राप्ति और सब विषयि जाइल। ओ अहिनाक विरक्तार एवं प्रान्ति के प्रति, आचरण का होय के विरक्ति नारित्व के एकीपरि बुद्धि एवं जोकर महत्त्व के मनुष्य रक्तवाक निमित्त ओ जोकर पर विषय से कथक किन्तु प्रकृतिक उन्मुक्त सोदर्य से और को सीमित रहने के अर्थ ?

मैदिगीक आचरण से ओहि अकार गान सब अकार कथक निम्न रहैल तथा कनी-कनीक एवमानक निमित्त अतत् ओ उन्मुक्त रहैल। ओकर कनी से सम्बन्ध नहि रहि ओकर मुक्त से सम्बन्ध रहैल। क्य और यौवन से हीन अहिनाक शास्त्रिक कोला ओकर वृष के सुभक्त ? ओकर प्रेम से एवमेक निमित्त एव अकार से कामना के गंध छलैक।

पौकनीक नारी हृदय में क्या और कथक समिन्धन गन्निहित से अत किन्तु ओ पतिक प्रेयसी अत से पतिक प्रत्येक काज नीक आ बेजाए समस्त ओकर पर उत्तरदायित्व छलैक आ ओ अकार के पतिक सम्बन्ध के अहिनाक प्रीति सुजैल छल। ओ मैदिगीक रक्तवाक सरलता, शिष्टाचार आ पतिपरायणता के प्रतीक छल।

नरेश एवं ओकर स्त्री सामान्य सर्वप्रथम अतक प्रतिक धिक् अकार अत-कारण से मैदिगीक प्रायण, अचार विचार आ काम-प्रमाण के गान सात सहायक रहैल। परनुकताप्रताक अतिरिक्त ओकरा जोकनिक अत-कारण से अहिनाक प्रेम के अमान अतकैल अति अकार प्रेम से ओकरा जोकनिक के अतक अतकैल होइल।

आन-आन पाठ सब सेहो कान्यनिके धिक् अकार। आन-आनक अतकैल से कोनो टा सम्बन्ध नहि छैक। केवल कथाक कामाक निर्माण एवं कल्पना के साकार करवाक निमित्त ओहि पाठ एक पराक सुजन भेल अर्थ।

अत में अतिरिक्त अर्थ से मैदिगी के "अपविषीता" के निमित्त एवं अस्तुत कए अत आनुषांगिक उन्मुक्त करवाक ओम के अस्वार्थ नहि कए अतकैल हा से पुस्तककार में प्रस्तुत करैल अत हमें से अतिरिक्त अतिरिक्त सेहो अर्थ से "अपविषीता" रोचकता एवं सरलता में अत अत अतकैल आमाक होय एवं आन-आन अति सब ओपि आत वया विमान लोकनि एकर अति विनि अत अति अत केवल अत रक्तवाक कए हमरा समी करताह।

विद्यापति-कृति-पर्य

३ नवम्बर, १९७६

—राधाकर भा

पहिल

कानूनमय एक ऐनगीक गेह, पन्तमा मन भुह, मुन्दन मन दलिक पालि, अनारक कसी मन अयर, लता मन बालि तथा बलिता मन हासिक साईल से नारीक अनुभव गुण एव मनुष्य मन जीवन मन गुण तहि जगतक होइल से ओकर ओवन निरवेक रूप बाइल तथा नारी मुलम परम्परागत जनशक्त समाधान से ओ कोवन से स्थानक सैभक के तर्क अछि, ओवन समात मानर से बुद्धि माली के हथोरेन भक्ति और कोवन अन्तगत से सोनाक महल समेत अछि । स्नेहपुर भेज समात ओकर व्याकरण ओहि उचारण मन होइल अछि से कतहु एक दान और नहि गए सकत एक बारि से दोसर बारि पर जहि का सैमिग से अछि किन्तु कतहु ओकरा गुण नहि उपशम्य सोइल ।

अहिमताक जीवन गेही एहने छल । ओकर उभरत गोदन, अनित्य कपण्डि एव नुपुन नमकुल पौन सम स्वप्न हान अन्तगत एनेक । रनातक गरीबोलीक पन्ती के अन्तिमोलीक पति से बुद्धि, गुण और समाज से निरुद्ध छन ओकरा मततु रानीत अभीक, ओकरा मन के लसताईत छलैक तथा अन्तःकरण के सैमिग छलैक । ओ जीवन समाजक प्राञ्चक सन्दन तथा परम्पराक कसी के ओइकाक सेनु उच्छत से होइल छल किन्तु ओकरा मान और स्यादाक म्यान से बाहर गए हृदयहीन कृपाव दान शान्ति आवायकता छलैक से नारीक मुलम हान के कडीर जनैत अछि ।

अहिल्याक पति रामानन्द निर्मलक कोसी सोजना से निरुद्ध ओगीक त्रिगिक अन्त और अहिल्या ओहि अन्तगत से ओक कम्पास पपाथिकारिओक पद पर निवृक्त छल । एव ओर गुणक अतिरिक्त अहिल्या के कारक अपूर्व समझा, मनुष्य मन और स्नेहम स्वभाव छलैक से नारी हृदयक स्वाभाविक उत्तर होइल । एक से ओ कपवली छल और ओकर ओकर ओइकक सिन्दुर रोग रान प्रतीत होइल । ओकरा

विधि से केबी लईक धीकरा सचक दसा रह विविध भए जाइक । केबी तँ दोस के देखि बेसुध भेल भूगमन, आ केबी चम्पा के सुनि बेसुध भेल अवर सन बकुन छोट छल आ ककरा दसा तँ विविधक बोहि कतिना सन मए दून धोके अकर शरीर जाका जइसा तँ कोरीय प्रतीत होइक । आएब ओकर ओ कय और पुन ओकरा भिलकर पहि कनाए विविध बनौलक । नारीक गहना तँ ओकर बधीरते के छोट छैब ।

अहिन्दाक केता केना लौरप्रियता बहुत तेरैक छहिन ओकर स्वभावो के परिचयन सेरैक । एक तँ ओकर दति रामानन्द मधोनुकुल बहि सुनैक और ताहि पर स्वच्छन्दता ओकर स्वेच्छाकारिता के लागी बड़ोसनेक के ओकर सम्पन्न जीवन के अभिप्राय सेरैक ।

मायका के दति और पत्नी कपन-अपन सेव से एक दोसरा के अनुभासित कएलक, अपन अन्तःकरण के एक बीमरा के समीपि के रहलक तथा तँ कउनहु कोनो कारणबस तो सोकने एक दोसरा के विमुख भेल तँ क्षीयक स्मृति ओकरा पुन के सातलक, भ्वात के बेसुध कएलक, सुम्बाक कायका मिहारलक और जातिगणक साजसा मस्सुर सन-करल के दूबा देलक । अपरिचयन-अन भिति केतु एक कम होइल तथा आकास के व्याप्त पलक केना जाकाय तँ भिन्न नहि होइल छहिन । रामानन्द और अहिन्दाक पारम्परिक जीवन छल ।

एकरेमे मदीक जवाह सन मधक भिन्न भेद तथा परिभास्यो मायक ओकर विधास के दूषित भए एक दिना तँ कृष्ण आकाश के नए जगतिभ मए टोनाए लागल और दोसर भिति होइ तब से परिभास भए कलक जोखनक सार्वभौम धर्म बनि अहिन्दाक होखि के सुनौलक । ओकरा कोरमे जव सन सुन्वर भेला केनाए लागल के समानन्द और अहिन्दाक जीवन के आएब छल तँ मानोक्षित करकक हेतु किन्तु विवाद बनि ओ ओहि दुह के एक दोसरा तँ प्रथक कएलक ।

कहल जाइत जे पुनोपनिषद उपरान्त माडेक इमेह दति से हठि दुन पर केन्हीदुन होइत बहि किन्तु पुननक जन्मक बाद अहिन्दा पर कोर टिकटिकिया सवार भेनैक जे ओ सगरा स्नेह के समेति स्वतः पुनकदप तथा जेवक शानि में अपना के बाए लागल । जीवन परस भदवक सेवा सन ओकरा कन्त-करल में सहणए सामन के ओकरा ओर के बैसकूद बनौलक । तदर्थ ओ गगन पर सपना नेख के उठबैत तँ छल किन्तु निगाह के नीचा कए सैल छल । जीवन-भार तँ ओ देना के कृपि गेस छल जे ओ सोइ भए के आव्हो तक में होइत

कम : बौद्ध धार्मिक धारणा में रामायण की हकीकत और मुख्य प्रतीक में।
 अतएव ही अस्तित्व की दीक्षा में ही बौद्ध धर्म की मुख्य धारणा है। निम्नलिखित
 निम्नलिखित धारणा में।

[illegible]

मेदिनी प्रातिक्रम्यारण्य । जोकर बर्ग करी, कप बाधन और आकृति
 में सुष्ठु बर्णन किन्तु अतिशय के भी सर्वोत्तम, सर्वोत्तम रूप रूप में सुन्दर धर्मात्
 यैस । कनकदन्त और धन्य नारीश्वर के जोकरा सुमरीय कर देसक तथा जोकर प्रेम के
 सेना के उन्मत्त प्रेम के जो जोकर शिराज्ज सन्तान से सम्पन्न भान्, भूकन्यास जो
 नीति के त्यागि अन्यमनस्क भाव से जो जोकराक्षि के नियम रहते सन् । बाधन जो
 जोकरा में भी नहि करैत सन् बाधन जो के के कठिनु बाधने सन् या के कोनी स
 काये करैत सन् । अक्षिप्राय दुःखन्यास, नेम-नेम, दुःखार-न्यास सन् निम्न
 मेदिनीके अर्थात् । जोकरा के से मानावन्त और के जोकरा निष्कर्मक प्रेमा सुगमे
 होतावन्त अर्थात् ।

मेदिनी और बहिन्याक एहि तरहक प्रवृत्ति लोकक सबरि से कटक आगत ।
एहि सम्बन्ध से कानौकान कनकुसही प्रारम्भ भेल तथा समानन्वक काल से एहि
प्रसंगक बात सेही से आएल किन्तु गहलोत पनि जगद आत के समोहि ओ समय
किसु देखैत ओ मूर्ख रहल । जगुनसाक पार से दबल, बिपार से कृणित एवं
परिनिष्ठित से परामुख भाए ओ ओहि आमेक के जंगरत तथा अहिन्दा के आभा
रहित सभ्य आर्चना भेल इति निनोद भग मेक ।

सामान्य अहिंसा के लें अपन हृदयक द्वार, मानक श्रोत तथा चित्तिक
 क्षेत्र सत दुर्लभ किन्तु ओ कोना एतन धनकटि, एतक अवाटकि और एतन
 विश्वकी भाए केत ? ओकारा अहिंसाक एहि तरङ्गक आनन्दक मांका स्वप्नो
 मे के केत सदैव । ओ एतक मोक्ष और मिथिल होयत के निर्वाह भए के

एना कुकर्म काय ? किन्तु हाथ रे मारीका बुरा ! 'ओघन' बहुरिए में सोम भर जाएत अछि ! 'साधव के' की कतहु नैतिक संघम तथा पणवक बन्दन भेनीक अछि ! ओकरा तँ देखन हृदय और मनसरा भावमयता होइत छैक ! किन्तु भावक मनसा ! की ओहो एहने भइराम और दुखर होइत छैक उकरा पवनक एक मोट लोक उदार के लए राखत तथा एके मोट धक्का से दूहि धाएत ? किन्तु हाथ रे नारीक अभुरक्त वृद्ध ! ओकरा नेत्र कतए ? अलट एवं उभतन मारीक स्नेहक उरमा अमृतमय अनुकरण मे ओभराएत रहैत । ओकरा बुद्धि और विवेक कतए ? मेम तँ हृदयक वस्तु बिक ओकरा बुद्धि में कोन सम्बन्ध ? ओकरा भीक-वेजाए, तर्क-आश्रम तथा साध-तानि आदिक प्रसव मे सोचबक मतवाति कतए ? ओ तँ विपलवक संविधान मात्र बिक । ओकरा ककरहु बीकन-भरत और मुक्त-मुक्त में कोन प्रयोजन ? ओकरा अपन आकांक्षक गुणि तथा स्वार्थ-साधन में सम्बन्ध रहैत अछि । अहिन्त्याक काष्ठरत सेही गहने मेलेक । ओकरा ककरहु में कोनो टा मतनक नहि एलेक । ओ अपन एक वर्षक मेला मे सेही सम्पत्ति-सम्पत्ति डेरा में बाहर एहए सामान और सामान्य विषय नन में अन्तर्धान भेल आत्म उदरक धन्यासा मे कोषन तँ मर्मोपध्वन विधि और बीखन ओभरिवा विधि एकटगी संगीने ओकरा ऐराक बाद के सेवीन रहैत छल । इगद में छल सामान्यक ओघनक अद्वाद और अकराएत अपमान । जोकरा अन्तर्गत अनीत तँ सुनीक किन्तु की ओ आत्मपदना करत ? ओहि अनीत मेलेके के सेवनीक ? ओकरा एहि समय मे ओकरा छोड़ि और दोसर पड़दे के ? एहि एकेरकुन मे परत सामान्य तिन रहैत छल कि आहुट पावि निजः पुनः माझ सप नमेक तथा कयक निधि एवं समस्त गुणक आवरि अपन हीदयेक न्यायना में समस्त घर के सजामर, नुपुरक सकार में समस्त दिवा के अंकुत तथा अन्न अपक-पात में ओकरा मन के विपन्न करैत अहिन्त्याक परार्पण भेल । सामान्यक अन्तःकरण सोमरान उनीमृत भए गेल । ओ अपन एकीने अद्वादए भागव । कुम्हा अनीक । ओकरा किमारा भेल । अहिन्त्या ओकरा कएलाक उपरान्त विहरीत बजतीह—'हे ! बड़ा रोसर दिवाह का सोपत ।'

अहिन्त्याक तथर्वस कवन के सुनि सामान्य मर्दाहिन भए बाबल—'की कतहु दोसर विवाह का सोपत ? एकर अर्थ ?' 'अर्थ की प्रसन्न छैक ? की बड़ा हवर और रागक पेश-प्राप के नहि अर्थ रहैत ?' 'समर्थ अहिन्त्या अपन कुलेम भुट्टी के मचरीत बजतीह । 'समस्त तँ छल किन्तु बँटकर नहि छल जे ई सिर्फ पुन एकेम भीम पोभाएत' निजक गए सामान्य जानन । 'किन्तु हाथ रे मायक सोचा और सावित्री के एकी कसकत ऊपर आपदिह हाकन के' एकरा मे कनेको नहि समुपपन्न अछि । सामान्यक समस्त एवं परमादपुनै उचित उत्तर दैत

जागन के स्त्रीक नवन के भीम कमल सँ, नूँह बाभूज सँ दाँत कुन्द सँ, जेकर
 तब प्रकाश सँ तथा मरुत बाप्याक ईश्वरी सँ रनि ओकरा हवन केँ ओ छिहक पाकर
 सन बभौलधिन ? को ओकर मुबतमोजिनो रूप संनय विशयक पुण्यक उन्नय केँ
 कड़ेबाक निमित्त, तिरछी नयन पुन्य भाष केँ बेअबाक निमित्त तथा कोमल बाहु
 पुण्यक वासना केँ दभाइबाक निमित्त अछि ? ओ मारीक बुद्ध सास्तविक कय पिक
 सँ ई अन्वये प्रपञ्चक भीत भए काहु क्लेशक गह्वर बिक गकर सम्बन्ध अनाधार सँ
 अछि । एहि तरहें सोपैठ ओ निहाक अंक मे कामीन भए स्तम्भलोक मे बिनाश एवं
 विन्यास सँ मुक्त भए स्वभ्यन्तर सँ विश्रम्भ करए जागन ।

अभि: १. एवाभाविच चरिते नै चैतनिक सुदृष्टा चरिते अनौचित्यका हं केचन
 कोशमयेकं सुसुपे टा कजेसु कृतएव एति प्रेम के प्रत्येकं वन्दुम ये चरिते
 नैतिका चनएवे धेवमकर मदीत मो:२५

एककर्म कहि व्यभिचार हर्गति कह मे हूँ गुरु सागनि । स्वरागिक अंगि निपाति रेखा के रेखि सुमुख विकर्णरु पर गन तथा प्रकृतिक ते पदार्थ अकार सावि जागद सुख के देवमक को व्यभिचारहि जन भग मेज के अकार नेत्र के देवमक को समन, ते जागर निर्वस जागर के देवमक को लक्ष्मणी, के अकार जोगी देवमक को हूँ गुरु तथा ते अकार वजन अंगि के देवमक को होगक नर मर भव ।

[illegible]

वेदिकीय मन्त्रों को अपने बुद्धिमान स्वभाव से खोजते अहिंसा अति किम्वद भव
 धर्मनि— वे पुनश्च पुनश्च वेदिक पण्डितों एवं उनके आचार्य से भी यहाँ
 अवश्य कहेंगे ? अहिंसा एकाग्र-समाधि करते अहिंसे और आनन्द प्राप्त करते अहिंसा बुद्धि
 प्रदीप्त अति मन और धी-धी समझते अहिंसा भावक, सम्मोहक, सम्मोहक, सम्मोहक, सम्मोहक
 होकर अहिंसा विन्तु अहिंसे दानोर् यथाकृच्छ्र अहिंसा होकर होकर । ये मुक्त पुनश्च सम्मोह
 संकल्प होकर तें यथाकृच्छ्र उत्पत्ति विधि तेषां यथाकृच्छ्र संकल्पक यथाकृच्छ्र
 कर आचार्य । हमारा तें मात्र एतदेक सम्मोहक अहिंसे वे विद्वत्, विद्वत्

संसार

उपर्युक्त विचारों के अन्तर्गत हमें यह स्पष्ट होना चाहिए कि हमारे सामने एक ऐसी समस्या है जिसके समाधान के लिए हमें एक नए ढंग की सोचना और कार्य करने की आवश्यकता है। हमें अपने अतीत के अनुभवों से सीखना होगा और भविष्य के लिए एक नया रास्ता तैयार करना होगा। हमें अपने अन्दर की शक्तों का उपयोग करना होगा और एक ऐसे समाज का निर्माण करना होगा जहाँ सबके अधिकार सुरक्षित हों और सबको समान अवसर प्राप्त हों। हमें अपने अन्दर की शक्तों का उपयोग करना होगा और एक ऐसे समाज का निर्माण करना होगा जहाँ सबके अधिकार सुरक्षित हों और सबको समान अवसर प्राप्त हों।

एहि के भीषि लोक लोक-र सैन कतहु बुझैर केनीक अहि ? देख लें धरोहि बिह के एहि के रसम जो साज-सजमाय भेज-देव, सांसारिक विवि-नियंत्र भारि के खोके मयम कभीय नन स्वच्छन्द मुखक सौरभ सब मुक्त, हाथरक लहुनि सब लहराएव और भरीक लहरा नन सलल प्रवाहित होइत बलि लोक-लोक-नाथक लोक बर ॥

अहिन्दाक बर्णित के सुधीय लोक पौवनक धादक लगभग एव सास्वत सौं सुनि पुन बरणीह—'हे मुनिर ! साकल भूत के नन एकेक सम्पत्ति कपुन लोक-सभीषि पावत लोक पौवन और नाथक लें उपासनाक होत सन अदिक विह । अभा भारि सन कुवा-पुनर और कतहु लोक-र सन मयम बकरीक सैन की संवाजनाक दूषा कतहु और की होत कतहु मुनिक दुषी भरहुक भूत लोह बुकन ? हे अहिन्दि ! जाननक दुषात ५२ कतहु बोधी बंगल बलि ? जे बन्नु कुपौवस भेला बर देवक आरुह जो दूषितक अभाजन कथमय नहि नयनक हंडक बिन्दु होत रे मनमारमा मारी बीनन लोक-र एतयोपरि अकिण नहि जे कपम जीवन के गति से कोन बचावो ?

मुनीसा के नसर सैन अहिन्दि बरणीह— 'सं की कियारा रामे के चिरजीवन दुयवाक हेतु जीवन भनि एतक पायोजी कत गुहादनाम हनु और नहिबारिका बनि लोक-र सजायन कथक हेतु कथमनि मंडल हे बलि । 'भाष मार कत गिला सने बाणक जानक सन मार केनीक सौं भीष पुन हनु के साज-सजमाय पुनक इंदर देख, तिप्पस दीक सैन अदिकत अभाजन सेक सन पुन करवाक लेतु लघन अचिकारक सावयकनर हंडक । खोजन और नाथक लें अलिब बिह किन्तु के अभा मय के बाएव अछे ? कून और सैन विपय बरहुकर सैन मति अभाजन से लोक-र बाण । हनु अभा मारी जीवनक बलिब निर्वैर कर सेवत । लोक-र सन हनु लोक-र होइत से बर से बन्द भान विनिऔर कटेत अलि, बलिब सनक केनीक बरन पुनन करैत अलि और मति सन सनभाराक हेतु लोक-र सन अनुपाय विचार कतहु अलि अन्य बिह जो हेतुन मारी जे 'हनु से ते गोर से नन देवुलो लियार' के पुनि जपन के सोसावत लोहो बुधीय अलि हे बलि । महु मारी लो अभाजनक अनुपुति, अगतक सन और सारीक अचिकारक लोक-र बरलि अहु के अलि । की नरी के कोनो बहु-भाकासा नहि ? की लोक-र अपना विपय से निर्भर सैबाक कोनो टा अधिकार नहि ? इच्छाक अचिकार लोक-र केनीक भीषन से अदिक अभाजन हंडक अकर कोनी पुननभाराके अलि पुनि करैत । हनु लें धिक् सभाब और लोक-सर्वह ।

[illegible][illegible]

तुमने सारा जीवन धुन क्या के गूनि महिमा उपलब्ध करनी है- तो यहिन ।
 है मय वातावरण धिक प्रेम के की कोनों परिलिखी थीक । जो तें मनीष एवं
 लभानु होइय । प्रेमक गणिक के दिखि बही और राति रे की कंवो भिन्नता बुझि
 पड़ेन होइ । जो तें स्नेहक साग मे दुखन एन तनि एव विचार हो कृपित गार
 मयवे हा जनेत मयि ओकरा लोक-वेवाए हावनाक समझति काल । ये तें बाँझ
 रहित हो गान्धर्व होइत मयि ओकरा दूषण-दाय दुखनाक समझति काल । ये तें कलक
 मयक मेह के जनेत अमय । केही । कल्पना मयि सकनक विन्तु की ओकर प्रमा
 निमेष और मेघ काही किन्तु मकर विद्युत पड़त हो कल्पक मयि होइत । प्रेम मे
 कनहु प्रपञ्च मेनक भयि । ओ पथक तन कडो होइत ये गान्धर्व हो मयि
 कनेत अमि

चारिण

होती गुणो, जे ओर जैति विनम भूति विक । होश दिन भोर हाथनहि
 बालाबाल अङ्गना मीर कोटिनीक बानी गगन प्रसन्न मे पल्लव जे ओ बूट अग्न
 प्रणव के कानूनी कल देनाक हेतु हुनोव जन गेल । ई कथा निराल मंटे के ले
 बलबोहीन तमबैर फिन्नु बजाकको लक्षण हगमागध सुनि कोनहुनक माझो
 बनाव खान पुनिनकाक बाप बाबरा भाजन । प्रसन्न-विभाग पदधिबारी
 बगवनी बसक बान मे रोने हे बकक गहजन । बसोही अधैर बपक प्रगतिबारी
 सञ्चन छनाइ वे स्वय विद्यन भसक एक गोल विनमक संग दिवाइ बार खान
 हाथरव जीतन के सुकल बनोवनि । सुलीना हुनके धर्मपत्नी १५-१६ । बसोही
 बानि भसक विनोदो बलबोहीन दिवाइ प्रसन्न समयक तथा स्त्रीन स्वनंजना
 भक्षन पसपत्नी हाथरव एहि गरिब के नकलक एक कानूनीन पुनोपुतिना भगदल
 बसोही चुमननि जे बपन मानबनक हेतु अभिमान छल । ओ रामामन्द के
 बलीनधिन तथा भाकरा ले भिषिग राग मे गहि मांगक एक गेट निवेदन नए
 दूर-भाष संज्ञा से सुनोवक अनुमदनार्थिकारी । एव सहायक समदन्त के गहि विषय
 से बगवत करार एहि प्रसन्न आदेवक बाबरा कयन । समदन्त एहि प्रसन्न के
 अनन्तक उन्नत हुन भसगत ०५ अपराध पुनि अगमननधिकारी के कोहि बुद्ध के
 बन्ने भवार सदरगा गेटेक आदेग तथा गव से मुक्त बाबराक गगनसे देव

प्राक संज्ञन भवि बिनु ओर हाथन पिक बिनु जाने । अहिन्ना ओर
 मेदिनी भाग्यन ले गुणोव भगन अङ्ग-वराग मे नव सारा ओर उन्नतन के संवर्ग
 के भोकरा प्रणवक गुन मे बावड करवक हेतु चिन्नु भाग्यन ले प्राय निराश मे
 पारित होइत भवि । बगवत प्राय बाधन बखन अटिलर ओर मेदिनी पर
 खलवक । नेत्रक बाल कोर, विवागव भार से भगवत गति एव स्त्रीरम पुनरिज
 ले पुन समो पुनिनको गहनि सब सुनिन बसकपी बसक अनुमण बाने कापनी
 सव कृष्णक हनिपोसन हकर, होसनी सब कृष्णक एव बिनुनी सन कमकल अहिन्ना

हन्तों का अस्तित्व और मोदनी अहमदाबाद में पठाओन गेन कोटि युगलप्रेम
के देखाया है। सगाइलाक कपड़ों के लोभ छगरीक पकड़ एक दिशि है पोषण

[illegible]

जोका केरातः कीम सुत रातः-१५० केत धामुमय कर्म पं०१०० अंगवर्गन नयन।
पुरहृमिषा फुल सन रविज घान पान सन पं०१०० लोह रजगमयुन लरी० अघर
कर धामु० सुम्मी। विगुन निगमक रद अ०० नीचर ह००० मन्त्रि-संशुभा आ केरक म०
मट मे गृह्य अगमग हरेतु पाली समाह्वनो० घन के वनवमिष्ठ भूः होषण सामन ।

[illegible][illegible]

अहिंसाका इत्यस्मिन् यो धनकः कथं चरति तं भोगः इति कटु रसस्य एवं उद्दाम रसस्य
 मानसिक समता बाधामेवमेव ज्ञायता नर्क विषेक, संस्मर और प्रीति पराजित कर गेन
 तथा जो अहिंसाका पंथ केन धर्म सन्ध तन एवं दृष्ट से प्रोक्त तात्पर्य मित्रि सन्निवृत्तनीय
 मानस्य के निवृत्त कर मानस रस विनाश करत से तद्विहित होयत मागेन ज्ञानी नो
 दुःख निर्गत करत और सूर्य सन प्रतिधत्तित मए जेना सूर्य चन्द्रमा के देव और चन्द्रमा
 सूर्य के देवि अनुरजित होइत तद्विगत श्री प्रोक्त एक-दोहा के देवि अनुरजित
 भेन

छठम

समय-संग पुण्य ईश्वरी और हँस सी सहायता, व्यवसाय ही पीयर एवं पात्रों की काठ बंधु, जगद्विद्वि, मेदिनीक हायत हिंदुम सन सुतेक । अहिन्त्याक मोहभित्तों और विद्वान् धर्म, अस्वस्थ गति एवं कलहा विभूति सीध सन मेधिनोक करम पर मोधिराए साधन सन आ मयक मोत के मयोईन विचारए साधन जे अस्वस्थ आसनक शानक आधर मेधक साधनी, सुधी विचारक सीधक दोधित से हस्तगत बराकमो एव कुनरसन रंभरगाली ऐयेविहीन उमरत आए बाइस ओ कनहु ओंकरा जिनि नमरि सौरीक ओ ओ मयक सुपन सन सुनम ओर बन्धनला सन सेकम अस्वस्थ गतये अहिन्त्याक पुनर्मननक सुख निनाल दुनेय गम ओकर विगोमानिय मे हम्ह मरिगान्ते ओंकरा गच्छन सुख बरमेक

रनेद्वितीयेक करिषे बन्धन मेदिनी के अहिन्त्या उम रहईन छम से ओंकरा स्पृति ओंकरा अन्न-प्राण के मानेन छुटैक एवा ओ मोकरा बिमोह मे ऐराग सहाई सारीत छम से मोनस कनहु जाति बहि भजेक ओ बाय ओकर विगोमक अस्वस्थ ओंकराइत अगत विद्वान्ता से इकाट करैत आमाय करए नगीत छन जे अहिन्त्या नगीत मृति निर्विषम सुपनक आधा और ओंकरा मर अस्वस्थ समक निमल्लुप कन्यका घन सुजेक । मल्लाने मोमान के मतन नगरन रनेन छन, पदोन्नता सन स्वच्छ रं मयोपुन के गाम कए सन मे गम्ह सलीकन के उल्लय करैत छन कनहु हौंदा गन अपन मधुर अन्तरा ही भित के ईगमेत रहैत छन ओ निद्रा सन बेगदा के हनि कनहु दूर चल गेन सकर कैमपाणक कुटिसाग, मधुरक-रग, कुचक फहीरा एव नेचक उरगता से छम मोधहुत निमित्त नहि बिसरन अगछ । किन्तु ओहि छम ई अस्वस्थ की मर सकत ? एवंकयक जाँह से बृशक उतर लहरैत जाता के, महुवन विहुमैत फल के और महुवन चन्द्रमाक रचसत रचोत्तनी के पकड़बाक ओ अमाव जाती छम अदरा लोक उन्माद सुमित छनैक ।

हैं कहिजो दिव । भूप धीरे छाहूँ तें दिवतनेक रंग बिरंग । एहि तगहें सौंवि ओ आकास
 दिवि देखए आकास तब । मलयक वाता कहिरे बसधौ सोहरा कहित्याक कय से धान
 मेरीक ते छरतो कहै आकास के । अपन आभा में बसकामैं बसि । ओ मनुष्य मरन
 से आकास के छरण धेय के । जयई ई का पृथ्वी तेवि । नहूँ नरतिन लं पैय विन्नु भव-
 भोग विन्नुपीक जगजग । कहहुत भए बेछानहरा मए यन तथा सोहरा कोकरी ह
 जेवना नहि रङ्गमैक

होत में लेख पर बेहती के । मरनक पदार्थ दुई पाय में विभक्त सुनना
 गेनेक जगह उदय विन्न-विन्न होएछ । मरनुक सुन्दर कस्तु स्वपावन प्रियताक पुष्ट
 कथ में तें बनल गेछ । जे स्वादेसिद्धि प्रियताक हुतु बरिछ तें दिव मरनुका कोकरी-
 बाध होइमन होइछकोर तें लोदय प्रियताक हुतु बनैछ तें स्वादेसिद्धि मरनुका होइछ
 एहि रङ्ग विपलेक कीदर्य पे प्रियता तें बसमान होइछ किन्तु उदय मरनुका होइछ । शुक
 के तें लोदय-यं न कोर होइछा के स्वादे-प्रम बहल पाइछ ।

जो लक्ष्मणे की वरदान वर ककण्डु विषित घृष और ककण्डु विषित घात बापि ककण्डु हृदय में कसकर बापि गदाए और ककण्डु हृदय में पशु का का ककण्डु में चैरव और ककण्डु कसकर विह्वलक राग सुभाए ककण्डु जीवने के अनाथ और ककण्डु जीवने के अनाथ करैत होवत

[illegible]

परन्तु जतिपत्रक सञ्चारक अङ्गण के "सोच नाना प्रकारे" भणिए। मानक विनु
संस्कृतभाषी से कततु की दवाभवा पहा पालकिक सक्ति। र म भण्ड के विद्वान
भनेक जे कतिन्वा। सुपेदनाभण्य भए जवन पीपन के संभ कए छान सोकक यावा
कायिक सेवा जो ओकाक विद्वान् जेन प्रथमपत्र १७ मे देखैत सञ्चारक सक्ति सनपक
भेनिवा भव्यो एण गण गति मेस तथा कनेवाक दवायमला मे कतिपत्रक संभक
विभिन्न कानि मे देखि सक्तिपन जेन विद्वान् मे दृष्टिमे। कटस विद्वान् सुति सनपक
के सावधान भए कटस विद्वान् मेस, कटस विद्वान् मेस, कटस विद्वान् मेस
दवायमला ओवनक सनपक के पुनर्जाव। जतिपत्र दवायमला कट सनपक सनपक
सोचनक नुनक सनपक ओहि सनपक सनपक सनपक जे निनक या। कनी-कनीक रस
पान करैत सक्ति।

साठवां

अहिन्त्याक प्रेमनिन मे दस्य मेरेनो एक दिशि मे अवन भाकुनला के
बकर काना मे अगमयें शुभ और डोकर दिशि ओकर हृदय चिहोवन बनी मे
अहि ओगोरा मय मेम तनैक ओकर हृदय ओहि दीग सन अहि भीतर से से कापसा
भय मेन हलैक और बाहर से ओकर मुँह लान वगोक लगैत दस्येक ओ अपा
प्रेमक मयुड मे अहि ओकर सन मे बहुरादह बिभट्ट भेध मे अहि धक्का
करता गया अगर अनुरोध मे ओकर प्राण उधरव करत आसीत तब अगर ऐनक
भासा मेरेन मे अहिनुत एक भेध भेध सन ते ओकरा ने ते ओकर मयैक आ मे ओकर
अहि प्रेमक पासा मयभन्धोर तनैक ओ ओकरा सन के पवन से दूरित
मेकसजन सन गमहर-ओकरा भगवत पवन सन एका भेधकरा हूँ बिभट्ट सनैक
मे अहि सगली सन आकाशक हरेक बपरसतु सागर पर अनदान से मिल
होइत मतिना ओकरा भेधनिक रनेह सनक भावि मयभन्धोर सिता होयनेक ।

गहकसे भावि ओ अहिन्त्याक कोमल बुद्धि करी कस दिनेयाक पन्दनी
सन अनाइ दिन कस सन नाक हुरहरिधा सन गम सन अकर हृदयक पारीक
बुध सनक बहुरादह हनुसी कस सन एकर भागोरिक भावि मे अपन सनक बलि
के उमसाए ओकर कस के गोवाक निमित्त सनक उन्मुवते गति सन ओ ओकर स्नेह
पान करवाक हेत ओइयक बेदाक उमक ने छुड़ किन्तु मे भाक बगनहू से ओ
एनैक भावि कोन के बेनैक अकरा ओ अपना के घरनी ओर आकाशक बीच
मे पवन बुद्धि मे कोनक बुध हो- गनका गम अकरा कोनक बस्तु के तेनैक भावि
अपना के कपिलवर्हीन सनबैन अपना मयैक के अगतावा एकर के बगली हृदय मे
बगल अहिन्त्याक प्रेम मे मयुड और नेत के गरी बुद्धि दिव्य सौवर्धक गमति के
महय वर प्रदान से ओकर उमकाक इफला मे नीन से होइत भावि किन्तु ओ अपन
नाक सन ओकर नकेन मे कोनक हृदय मे सनैक सन ओ अहि नेत के एकजन
अपना दिशि ओओत रति सन अतएव ओ ओकरा से मुँह ओहि काना मयैक

बाबत ? बाबत कारण सत्य है लेकिन अधिकांश शिक्षा में उपयुक्त एवं संस्कार विराहात्मिक है जो कि सभी को लक्षित करने में सक्षम नहीं है। बाबत-विषय बाबत-विषय के एक कारण है।

काया और मायाक मोह-स्वार्थ धैर्य की जरूरत जगत-कर्म से नाश के धर्मोपाय का लेवक दिविक ही अद्वय ज्ञान के लक्ष्यक हेतु विद्वत् ही थे किन्तु श्रीमत् भुव के सुदाक हेतु जरूरत तक ब्रह्मज्ञान पर्यंत एक गुरुदेव सतीत और मधुकर मन केनवीर दांड से बाधित तथा कलिया मन दीपक उभेछि यह ब्रह्मना जग के सर्वत्र करवाक निमित्त जगत बाट भटका के अस्वभाव कायिक जगत हीकर शीघ्रक लागत शोकक शीघ्रक व्योमि हुन के प्रदियात एत

बन्धुनः विहाय नौपक शरीरि मम भीषण ये त्वहि एकं चक्षुः जहास्य शीघ्रं प्रगल्भं
 त्वं नात्र मसीनं होइस्य । पनाय्य चरि के' अञ्जनं होइस्य भग' जहास्य लखारं त्वं
 कुलाग्रल अस्ति । जेयो के कतको मुग फिारक से रङ्गोज विस्तु मरकत भोंकदा के
 कुल मम चूर्ने भग' सेवेयक बाकदा त्वहि होइस्य लखल सेधक भग' हास्य मसीनः

[illegible][illegible]

धनकर्म" कहि जहिण्यार मेदिनीक संतु मे भातुर एव अधिक प्रेम मे बाबुर का।
 समस्त साध सौंदर्य वरन के चोटि कण्ठ पगल सौंदर्य से चल बाहु अपर और फुलमन
 मेदिनीक संग चमकी करण सारन तथा विनास और विरोध से तेजा मे भिन्न भेद के
 बिन्दु मे जोकरा जोकरा के कर्मन वन वनत होनेका कहि अधिकतर राख मर मेन ।
 मेदिनी के सावि बहिन्त्याक समुद्रत भग्न करन से सतन जगद प्राय है भरवि जगल
 तथा भी जोकार संगत भोज के पुनर्विगत और उद्विगल काननस साहित्याक
 अगक इन एवं लोकरा लपलप मीन-मृग गगन इकल मर मेन । जोकार के फुल मेरीक,
 कलभुदी सगवि मेरीक तथा हापक बारी कूटि मेरीक । धनकर्म काय कोर मे निरन
 बहिन्त्या जोग राध हीनक और मेदिनी सुमनस लज पाग तक दपन के वगम एवं
 मे रवि अनुजय से अनु के कागद

एहि तरहें राध-रगम न निरन मेदिनी राजन— हे जहिन्त्ये " दीपक राध
 से गन्धक गग वृक्ष पुनि करिण मारन तथा कम सुखेका से मारीक के मे देन
 योगि कर्मन चल पाइ। मे पुन मारीक के मन ही पूर्ण सेना पर भागत बरेत
 कहि किन्तु लनीक कोर का बाध और बुद्धीक चक से बधि काग मे बुद्धि चरि ।
 कहि अधिक के से मरुत न मरुतन भवि किन्तु सुदूर चरन के कनक मरुतन ?

मेदिनीक निजगत भगन दसक उलर देन बहिन्त्या बाबुरि— हे नाथ
 एतल बातन है गन्धक मे अंग कंचन कनक है सुखे पर किन्तु विजगत अलन
 कहि हुनक पाय मे सुनि न नाथ देन न भी बाबुर का के लपलप चिन्मे डर
 करीक पुन भीक नाथ कीर मर है दहि बाग मे हुनिन आइल नाने है भीम
 गगल अहिहादिपी चिक किन्तु बिघन जय मे मे मारीक संगत हीन से को कारी
 मर पाइल । मे कारिना मरुतन के पाग मारीक से हो कारी मेन कीरि कर्मिना
 है सुख । लोकराक भिन्नक भग को कारी तहि तावन ? पैस मे गविन चक
 नि लपलक मंडल मे नाथ पर भागविन रहेल ।

बहिन्त्याक कथा मे अहिन्त्य हीनत मेदिनी बाबुर— हे मारी बहुत कारीकक
 लप करीक छी ? कारीक से भरीक पुन मेन मे विगति रहन अहि कनक संगत
 राजन करीक । मे को मृ गगल वस्तु कहि चिक ? निजगत कय मे कारी दान से
 लोकरा उलर बाबुर कोषा केन आपक इन जय ? चकरा कारी कहि वही
 बहिन्त्या बुद्धि रीति क वस्तुन ओरु है लपलक बुद्धि करीक लप मरुतन वस्तुन
 लपनीकनो से ओकराहि दान हुंइल । हे सुदरि " लोकरा कारी पुनभी मे कहि
 छैत है लपलक लोकरा के लोकरा कोषा देखीत ? की को कारी पुनभी हुंइका वस्तु

विशेष ? शरीरक कसो गुरे से नै बाधक सुखस और दान्यवक साधन्य अदि
 से बचनक ऊपर बचन सन प्रतीत होइय । की अविनाश विना प्रतीत करैय ?
 रमणीक केनकसग लया नारीक योइ के नै कारी तपन मदि रहैत ते की मरी
 साधन्यकी विनाइ प्रत्यत ? गुरुन काम बन्तु स्वयं और निर्मल कनि बचन कनक
 कय से कारी मतिरहित नदि बनि ?

मेदिनी प्रकाशक बारी के सुनि मतिरहा सपुनान बाननि—“हे स्वामी !
 श्रीक कानकेनिक मनुजान बिक । जहि काने से मतिरक साधन मदि रहैत को
 सुनारी मदि बिक किन्तु से प्यार सपुनक अल से नहि सुनारत आ बंस नै कही
 सक सुन ए सकत लया एक बान के सुने मोर सुन नै मदि रहैय ?

अतिन्याक उदिक कस के सुनि मेदिनी समई बानन—“हे नारी ! विविध
 अविनाशक अभाव से अदि अविनाश के के सोक करैत बनि ? जकर बीच मोर और
 बहान कानकेनिक स के मति बचनक अंकन मीउ और अदिक जान कोन होइ ?
 हे अतिन्ये एक पुनक स से कतहु मन बरनेक मति । अमर अमर पुनक
 सुनारत लया मदि और पुनके नै कनेक अभाव के कान सुनार बरान करैत अदि
 किन्तु की ओ सुनित बिक ? काम से मेनि बिक अंकन पयप से कोन सुनिय ?

मेदिनीक लोचनो उदिक के गुरे मतिरहा बाननि—“हे नारी ! अविनाश के
 रहैत और अंकन कतहु काम मनुके बनि । विना से कान पान प्रेमकाक
 सुने प्रेम केने पर उमरनेस अदि । अंकन सुनारक अभाव बर मदि रहैत ते
 मरर अदिक कने कोन ? मारी नै पुनक धाह बिक । ओ अंकन विना कोन
 रहत ? अंकन प्रेम मन पर निभार रहैत मदि से अंकन कान काम से कन और
 मेन से कानि नै बनि । हे कान प्रेमक मति बर अवन कानन नै पुन के
 मेदिनी के ल मचनक मन्त कान से सुनिरहित मेन । तदये मेन कानन पयप
 बान के मोर कानन मेन सेवार मदि के अमरि मदि अवन कानक अनुमरण
 करैत मदि कानन मया और पयप के मदि मेन पयप-अन से लया सुनिक
 । अमर-मरर से पुनक नहि मय लकाकर होइय अंकन कान से मोरि एक अम,
 एकरस और अंकन से मति एककर मर बान

एककये मतिर अतिन्ये मेदिनीक संय सासे कस पयप के अमर कानक
 लया सुनित कान से अंकन मन्त अमरक मयन कोन मरि के सुनित मयन
 के मनुकीन कान सुनार मरी अति के अमरक विनाशक एव काननक
 होइय लया लोचन के विनाइ मेन ।

नवम

रात्री आदि मेदिनी अहिन्वा के एक गाँव होटल से सहारा खान के गल पनए ओकर स्त्री प्रतीभा से विगतत व्यसित भए खान के के ओकर ऐशक बाट से ओकरा मोर से ओकरा मित्त बागएक ओ मेदिनी के बेसितहि हुनसि मारल तथा ओकर अंगल स्वायत्त करल जागत । मेदिनी के बेसि आकरा अपार अरन्ध के होइने बागल रागहि ओकर बाहरना ओर व्यसित म परिचितन देखि निष्पथ मेओ मेनेक ।

ओवन-आनन्दा आरत्त मेदिनी के अपन निमित्तानय मल पहनेक अपारा ओ शाय होइए देने दए ओ ओकर पुनर्पन्था से निमित्त भए गेल तथा किछ दिन के ओ खान नुप्त भयादा के पुन प्राप्त करएक मेदिनी के विचारात अलैक जे दू नन्दा से विकसित बन प्रकृत फल लागल तस सवा पोवन गल से सिमित भगत जसक दृश्य से यत्ति घन कमेबाक पिता से मदि गलेय किन्तु निधनक संभावक कारण ओर अलग से कोर गुरु अकारण होइए । तदर्थ ओकरा घनक तुम्हा इतिहा मेनेक ओर ओ गदि हेतु दूत पनन व्यसित मे समान भए सवा प्रेर गतिहे हुटुक उपमोश कारण लागल

अहिन्वा भनी आदि अपन दृश्यक रस से मेदिनी के परावीर करल करीप के विमरि गल ओ ओकर मगक मधुर प्रतिसा वनि आकरा निम्न सौंदर्यक मृदुल मलिता से बनगत करीप आन ओवन के बीरवा लागल तथा ओकरा पनीत अलैक से निष्पथ मेदिनी ओकर जंग से अनुक्त पाए ओकर नैत-पुष्पक पायगुर्वा मति भेन ओकरा ओ लेना से अपन स्त पाग से आनन्द बागएक से बनगत मल पोतहि ओकराए ओकर नैतमिक राधन, रत्नकल बीरन ताल विपुत्रभा सन आनन्दमगल भागद एवं अलौकिक कर्मलक रमावादन करल लागल

अहिन्वाक योग्यता एवं अनुभव से प्रकटित मल दूत शय स्वार्थय शक्ति विचारय से शक्तिक नयन बद ओकर निगुति भनेक । व्यसित ओर

सत्यमेव जयते

कोयली पहिली पत्रिका अचोवना। और अभीइत ही उ-बोविल हांडत छन किन्तु
 बोकरा ओ नारी जीवनक अधिकाय दुखि नीम छवामार और वारीगत नै बनम
 छैत दुखि अचमान और। पत्रिका के सहीत आन्तरिक तर हैं अनभिज्ञ छव। बोकरा
 रवली वे वे विरपगत रवनीत के बनारसी। रनेइ और फमगा क्षेत्रकक से अकेछा
 सन्ताप दए बोकराहि पत्रिका के सेटनैक। किन्तु हाएरे नारीक आसरण कोलने
 कानुविम भिका नारीक जीवन जे एक दोसरक सीमाय के अपहरम कए प्रभुईत
 होइत। रपन मावम्य तइ जीवनक जाअ पमारे कौतुहल रवे ओ पुछक सम्भेष्ट
 करैत नहि अकर बाय निकाइ के सँ आनन्द प्रदान करैत अछि किन्तु दुधमनुक
 भाव हरण करैतु अछि।

[illegible]

और जोकरा का बरतित धड़ल । येधिसी अतिन्ना के दिशि सेतुं उपान लोहण बाबन
 लमा कीकरा मरिंद और दण्डन लीं लीधण मागन । अतिन्ना काठ दान दान कण
 दूध और बरिण चण सब सिद्ध सुनीत खीर धरित रत्न । आसमई गुनि लोक
 दबई न आगन निकसु ककरा सोम गज सुनई वे धरि कानसि मे पदेत ? माक लीं
 दयलगति सय । लयाइ दिखनक और उपन चण मेय

अनुनासिक गंध से कृष्ण अहिनाग भोजन ही ही मिष्टान्त किन्तु धोकर खायाक नोखा से छत्रनी परादि रहस्य एवं चोरी आदिक लोगों के बन्धन का लेन देन है। प्रकृत केवल ओकरा कर्मिण्ड के गुणमान नहि बनाए कवन ओकरा कायक प्रामन बग ओकरा सुख के नयनकेल। कवि से कहेंकर एन स्वभाव के कोमलता के चोरी देनके के स्वत ओकरहि विनामक कर्मण से बंध किन्तु हाथ से मुक्तके आनन्द के बंधन अनोचिकेक निमित्त नारीक के लक्ष कह ओकरा संसारक विनृत बन्धो धारन अदि आनन्दोशन नारीक नारीक सेवक अदि सम गुणक सीधक से ही उत्तरीय अदि किन्तु गुण ओकरा व्यव कर भुक्ता बनाए ओकरा जीवन शक्ति व्याप्त तथा सेवन कुशलकेक उत्पीड़न केनो इति अज्ञान दिना से अज्ञान मय आनन्द ।

[illegible][illegible]

जबकि जहाँ ज्ञान विधिते मेलितक किन्तु हमरा से मन बलि से कोन सही हयरा विवाहक शिमिल सुभदा खपाक ओकरा करौने रहितक । जसएव कही हयरा अपन सभन लपचा के कहत । ब ई से बहिन के काम सदाथ ३ किन्तु बहिनका परिस्थिति बह बिचित्र मन छल । सो से कहियो अपन अमबेली अपन, सुंद, मुचुमुच, भोजनी, गुणगुनी अही पयेली तथा सुख सुखबनी बहि सुखी छन मालतीक रूप से बहोदात जल तँ मरीक केनर कि कपनिनी और कुगुडिनी प्रदुत्तिता नभ अपन सुखम गरिमम और बंधोद से लोच के से विदग्ध कएतक से ओकरा स्वत अपनाह दुपेसाक हयन कोना कहनैक ? किन्तु चर और कहिनिक से व्यापक सम्बन्ध छन । बहिन भगम कोना सकल हरन के जगम भाव से अपकट सहि शक्ति बलि

जसएव जेनाक मायद एह सेहूगुने बानी बहिनका अल-करण से एक बांद मुक सेदना के उयत बगनक तथा ओ बांदि ने पिरक भग बगन—'जोना । सच । कय मन अलि किन्तु ओहि गम से को होगनेक ? सही से बांदि होगन से बगन होगन-तँ भी आकर निबगन होगनेक ? सो से जोहना रहनेक संजति लोच के और होगनाक एक गेट अवसर भेटनेक । अगन हयरा अपन के हमरहि अल-करण से अलिप्त रहन दिहोके

अहिनका उपपुनक कवन से निगन दुई भग जेना बाजम—'हे बहिन । जहाँ जमरा जनेत सो । हम बाहे भनि जसएव से नीक किन्तु अगन कहिनिक सन्तप के जगना गहि दूर करबाक प्रयास अवश्य करब ई हमर एह संकल्प छिक । हे बहिन । एहक के पयेली भव होपना जकर हयरा से कहिनिक सेहू नहि होदक । कही कहु अपन गहि किन्तु अही भव नलहु मति जसरा जीनेत काह गनेत सी । जादत अहिक दुख-दुख नलि होपत, लपक अही के जगन मायक भगहि रहत बगन । एक बांद मायक अपन बहिन से मायह छिक । भगनाक मायसक बागो के भुनि अहिनका न्याय से अर्थवत भग बाजम—'हे माय । भहक ई बाहिन पापीन कि । एकर प्रयच्छपुनो पायक कदा के भुनि बाजम हयरा के शिख और कल्पित केनु बनार । ई बांद से जगन नरनाक कोन छिक जकर दुपेलए होयन जेचल छिक ।' एवकहे कहि अहिनका अगम बाजम से गहु जगन जानए बाजम । जेनाक बाजम नोट सेहो अविदम कय से पचाजिन होतक भगनीक । किन्तु कानक अगनत भगेन योन के भुन करत बाजम—'हे बहिन । तँ अगन । मेन भने किछ छह हयरा तँ हो' अहिन छह । तँ हयरा नेन ने प-उकना मन बगन । जव मन पयिल एव कय सेन कोनल छह । नी कोनो च-अ जगन बहिन के कोनहु पचाया से अरनाभिनी

सुमनस कहि ? सागर-वह्निनिभ जेब मे तँ राख सजिहिअ कहि । केवल
भोजरहि प्रलय सँ बाधि मे राख, जब मे सँतासाता और सूर्य एवं वनर मे
अपेक्षामा लीक हो कहिअ । जगत् मे केबल जगत् नहि भेल कहि । केवल
पुनो टा तँ जेब रहैत कहि । कुब सुभगर सागर किन्तु भोजन सुभस भोजिना
लीक लीक । सागर मे के जग के नहि केवल के भोजन भेल नहि भेलक तब के
समस्त आधार कहि केवल ।”

दसम

एतनाक बहुत परावध पर लक्ष्य से उत्पत्ति करनेवाली बहिष्कार के नाम से जो
 ओकरा नाम अपना है उस पर लागू है। ऐसा जन्मिलहि ओ अपना स्त्री के संगे पालन
 भाजन—'हे, मनदे मेनीहू धरि'। मरणाक स्त्री कुरहस भुक्ति मञ्जीह— कि तै ह्य
 लरिपनि कानि'। किन्तु कहने से भुक्ती पालि देखनहि न अहिन्त्या के संगे मे
 देखि लोहा मे पालि भए हुनसि कह आवि। ओकर पालर भोग अरिअसि के घर मत
 लेक ? एतेक प्रतिपादक पालिअ ओकरा से कर्मका तथा मरणाक स्त्री कुरहस
 भाजन है— ई ओकर पालि किन्तु मे ओकरा नन्दि धरनेक भवि। भाजन
 हवागतक उपरान्त भोजन-प्राप्त्यन भन तथा मरणाक स्त्री अहिन्त्याक लेक ? लेक
 पालर पालर दुवार-मनार करि जागति ।

एतनाके अहिन्त्या नरेक ओर से ह्ये ही रहने से भन तथा नरेक ओर
 मोकरा स्त्री ओकरा पालि बह भुक्तीगत में रहने फल किन्तु अहिन्त्या के सतन बिछ
 ओर जन्ममनके गृह्यत एत ओकरा लोकरि के अपना पाला ही व्यपित एत बिन्ता में
 कतर का ह्योत्पत्ति कर्मका छन। मरणाक स्त्री अहिन्त्या के सतन परपति
 ओकरा बिन्ता में मुक्त बनेबाक प्रयास लै करैत छन किन्तु ओकर पालि हुदयक
 कर्मकाक धर्म केवल सम्भवत में काना भग सकैत ? ओकर हुदयक सन्तानि,
 भविष्यक जेवन और विज्ञेय के कौरक लेनाक प्रसंग है मरिच ओ प्रायः जन्म
 भग ओकरा में भुक्त किन्तु ओ कर्मका की ? एहि गुणगुण में पालि ओ प्रायः पालि
 भग जन्म छन । एतुनान्त पालि लेक ओर ओकर स्त्री बह मरणा से ओकरा
 रहने हुनेक किन्तु ओ सतन ओकरा लोकरि क ओकरा किन्तु रहनेक ? एतनाके
 बिचारि अहिन्त्या किन्तु नहि काना जेविकाक हेतु ओकरा उतार करैत। काना
 ओ मरिच ओ ओकरा स्त्री में पालन करि अपन पुत्रक प्रयास मोकरि ओकर
 एत हेतु भगव मोक भुक्तक। अन्तर ओ जेव कहिजा करैत ? किन्तु बिच
 आदि ही विभिन्नक हेतु रहने मरिच। किन्तु मे मे ओकरा लोकरि एक दे

[illegible][illegible]

एगारहम

जतिम्यक धर्मगदभा के देखि प्राप्तापक के बहुत दुख भेसति । ओ ओकर विमल समृद्धि, बस प्रतिष्ठा, का गुण और बुद्धिक हीनता के स्मरण करि विह्वल भए गेलाह । एकर ओकरा कतह बिधुल करेबाक हेतु ओ यत्न करए लें मरामाह बिन्तु ओ अपन उदात्ता, मीरुधिरता और सज्जनताक लेल प्रसिद्ध छलाह जे बाबुष जेणल मे भविष्यक हीनता से किजो हुनकर निषेधन पर आभी तक नहि देखा सका छलै सभ हुनकर उदात्ता कए सम्मान किन्तु जनए जनगण ही ककरहु कहला गर करैत अछि एका बुरा को आन धाह सुनि-सुनि के ईतईक । ओकर लें स्वभावे एहेन हीनता प्राप्तापक के उदात्ता सज्जनता तब । अपन धार्मिक प्रति स्वाभाविक समता सदैवविनि लैन सका नै ओकरा हेतु जति यदि प्रयास करए लगलाह । कहिल्या हुन जेवन हुनकर लें मंद कएएक लें आ प्रसन्न भए धरनाह—“हे केरी लो लें बहुत चरखि छलहु तबन तौरा भएक एतक जसह होइत रहइ लो लें जेनेत छह जे कानो माध्याम मात्र आय धिनु लागि नहि ओइत रोक नथर जकरा जइए साम रहैछ ओकर कज लोके कीछ गुतरैत छैक वषाहि तौरा हेतु हय किन्तु वषाह लें कएन अछि । एक गरि विद्यामय मे विधिकक पर रिक्त हो लो साक्षात्कारक हेतु आह हय तौरा प्रसन्न मे निष्ठापक प्रदान विधिका के कहलैएक अछि । हुमरा विप्रचन अछि ओ तौरा अवश्य चहुँपत करौह

अद्विषा के प्राप्तापक तहि ठरहुँ कहि भयना जेनाह से विदाह सगतनि और ओ पुन ओहि गुण-धुन मे निमज्न भए सोचए संगलाह सोकर माय्य भविष्य और सम्पत्तिक प्रभन मे एक दिन कत जेबन ओकरो भयना गर सुमान छलैक । फलतः कोन कदा समस्त प्रान्त मे ओकर पुष्ट हलैक लोक ओकरा देखबाक लेल घुमैत छल ओ ओ पुन सदैव भयना धाम्य पर ऐँईत जल, अपन रूप और पोषन पर इतरइत छल और लोक ओकरा पर इष्टी करैत छल किन्तु आह ओएह

काउन्सिल वीरविक स्नेह प्रकारा पाणि जो नेहास पर मेह छल बलाह जो बमगाप-
पक्षताप देरा है सिद्ध भेष ।

गोचक कभी एक उरधुक्ता है अहिष्ताक काट लकेत छल तथा देना-वेना
होकरा सेवा में निम्न होइत धर्मक वहिना होकरा हृदयक हरकत वहीत छल ।
औ नहिष्ताक सेवाक आरुह पाणि छलकर केवद भग वीरि आयति तथा केवद के
कोलि बाजनि बाहरे बहु निवर्णी छवि । औ ई नहि धर्मक छविन के वितन
केवद हृदयक वहीत रलो कल नहि गहीत छवि ? छलन एहीक देरी किछु वहीत
छवि ?

परिसक पानीक बाणी के सुनि जहिषा अन्धधनक मए उतर ईत बाजनि-
'हम कसक दिन परि कहीक पाहुन पतु ? जीवनक मनेक सल में दुःख और मुच
अमेत छेक । हमराह मोचन के मुचक कही बाएत । माय और बाउजक स्नेह हृदय
बाएत केवद मकर हृदय कल्लन के कलने रहियेक । कल्लु की ई दिन सलन एहीक
रहनेक या एकर जलने हेनेक छिन्क पक्षपात राति और राति जगजगल हिस
है अहितहि वीर । मेव की उचनन सा की ऊपर मुनि समल जग जे बसवैत नहि
किन्तु उपर में ते नाल-माय फल पुनगत छवि और ऊपर पक्षि में बस नहीत
वीर । परकेदि के कल्लन गेसा में की होहि छे चीन बहालन ?

अहिष्ताक निरुपाणके बाणी के सुनि परेक वहीत अन्धधन दुखी मए बाजनि
'ये राह ' राति एहीक य दिन हमरा लहि के की ? हम दिनका कलह ने जग
वेचनि । हमरा मति संकर मे होइत पक्षि के ? कल देना । होइत लल कलल
कल्लु मनदि वहीत छवि । हम दिनकी माय के दुखीत छविनि के कलह वीर
अहिना की नहि छवि । और ओ कलल छल पाववैत कलह के भी हृदय कल्लन
के बल्लह । बल्लननक । नन्ही । हमर मनदि हमरा मोचन छवि के राह जीवन
के कलल कल्लन । ५६ । ' मोचक नन्ही लल्लु और लल्लुह होइत छेक
अच्छा है बाउज अकलल रहीत छवि किन्तु हमर मनदि महेत ने मल्लुम और
मल्लुमिन्तु छवि के बाय बाउज के कलल नन्हीक वहीत है मल्लु मिन्तुने गेह छवि ।
के बमगापि अन्ध एहीत मल्लु है मुचक छल ? है कहि होकरा बाजनि में
नाह बहाल सायल । अहिष्ता मेहो काना है बाजनि किन्तु होकर अन्धधन वहीत
कल्लन के कोचक कल्लनक उहीत सुन है कलह लक्षी बान्हन नेव छवि ? निरीसक
मुकुमार फलक गल है कलह होइत वेदन केवद छवि तथा एक ही मए है कलह
अहिष्ताक बाउज केवद छवि ?

आहार-प्रणालि के जेना-जेना समय बीतत गेल छहिन अहिन्या के बिधा कीरो अधिक होमथ बनलैक । ओकरा अपन भविष्य अन्तर पुनर्जा मेलेक । ओ जपना जीवन के कोन मुकाम उपरोम रहि काएलक ? ओ की बलि देवताक तफा ओकरा आज और की देखबाक बाकी छैक ? एहि सभे बिचार के निपटन सए ओकरा समस्त ओकर जीवनक समस्त पटमा कासबकाना सम्मुख करि अपन कृति से ओकरा पबोलेक । निर्मलीक इतराहत जीवन, उच्छुल्ल जीवन और पयन मन पबित करमान ओकरा बन पबलेक । कोना ओ निर्मल रामानन्द के" छेलाह एए ओकरा तब बिचामुखाक कराने छल जेना ओ ओहि परकक कीकाक मोह-काज के फसि ओकर आमान के अकुलि अपन जीवन के मज मोर देबाक निमित्त उद्यत भेल छै ओकरा सुनीया कोना कहने बलीह अदि । मनुजी पटमा जमका ओकरा मन पबलेक । बलेक धार्मिक, कटोर और सत्य छल सुनीमाक ओ वाणी—'ओ' बादि बिषय बृस के रोपैत छह ओहि मे बिषय कम पुनोगत, फर कयलह और ओही बुझक साह बिष्य बनि सोरा तामेतरह, तीहर अङ्ग-वत्यङ्ग के अपन ताप छै वस्य करतह और ओ जीवन छै निराल एव निराश्रित भाग अर्थ मे जनम ओबन्तह के गनेबह"—की साथ प्रतीत होयत ? ओहि धार्मिक केवल बलिते बाबत रा छै अङ्गन बलि ।

बस्तुतः ओकरा जीवन के कोन तार बांधल छलैक ? ओकर जेना के के मज और इम्पान छलैक ? ओकरा संगार बापक नाथ पुण्योक्त छै ओ की उत्तर छलैक ? एहि तरहक उल्लेख मे पबि ओ बिचार छै उपयोक्ति छल । एहि अनन्तर नरेव ओकरा बादि ओकरा से सत्यतकारक वरुष मे पुछलक । अहिन्या के पूरे ताराब भाव केव छल नरेव से अपन जमककता के अवसर बहि कराय ओकरा बहुतादि देन तथा अपन कार्यकमक प्रमंग मे अपन पन के दृढ़ बनावाए लाबल ।

अहिन्या के" मे छै रामानन्दक, मे मेदिनीक आ मे गुमानक चिन्ता छलैक मे ओ ओकरा लोकनि के देखबाक उल्लेख छल । ओ ओकरा अलकारन के कनेकी स्नेह करतह प्रति एव छै ओ नरेव और ओकर पलोक प्रति छल के ओकर जीवन मे जाना बनि बाएल और अपन एतेह सारिछाक प्रवाह मे ओकरा बहिर नीरक जीवन स सत्यतक बिचार मे अन्तक किन्तु ओकरा लोकनेक हेतु ओ की कए धक-तैक ? ओकरा अन्त छै उमृक होयक की ओकरा छै होयत ? ओकर प्रेय छै एककि-साह अदि । ओकरा कोन अपेसा छैक ओकरा छै ? ई सगी अप बाप इतर ओकरा

अन्तःकरण में उदित होने और स्वतः ओकर विराकरणों ओताहि भए जाइत हैं सर्वेक किन्तु ओकरा जगः। पायासाय हीमए सागल तथा ओ घन और कमपाक चित्त में निरत रहि नरक में विगुक्त भेष । स्त्रीक मन जे विषय विनि प्रभावित होइस कठिन पदार्थ विषय जे सारनहुँ से में मरेत बलि । ओकर आचरण से पति कम होइत बलि जे नान-गयाय कएत विद्याओल पान के रहि देखि केवल नरे दार के देखैत बलि । स्त्रीक सेल से आस तबमहि प्राण सेतवार भेल जखन ओकरा सखा में पौछि भेलैक तथा ओकर माय करेबा (पत्नी) रहैत । तबसाह कहहि ओकरा पुनवायी व्यापिकी प्राप्त भेलैक जे ओकरा मुक्तिए रा सुझैत एक ध्याय नहि । ओकरा मोम बूझ से ओ पान देत बलि, ओकरा सामर्थ्यक धर्म बलि से ओ ओकर पारस चरहुँ तथा ओ विविधता रोज के ओ प्रविष्ट भए नबैत । एहि में व्यापक कोन होय ? मोम से स्वतः ओकरे विक ।

एहि उरहे विचारक सुझना में विमल भए कहिहवा मिल बकि फौज काइस सागल तथा ओकर नेना ओकरा छाती में ओकरा ओवरक दूध पीबए सागल । सम्भवतः ओकरा आर्थिक कार्यकलक किन्तु दान होय से प्राय ओ उन्नति-उपति के कालम् नारीक घन और कहिहवा भोजन भोजन, मुक्तिरक उपहार और जेना आदि के विचारि स्वयं लोक में विचार सागल जए सीकलता, गुण, सम्मान आ पीकलक सार सर्वेक ।

और भेल । कहिहवा काने दिह नम उतल । निर्यक्तिया से निधुत भए रीता स्नाय कएलक तथा पर-जगती कर्मकीक पुनर कएलक । पुनर कए ओ नरेल और ओकर फली के भववतीक बहाल कए जाइत — “मोती हरे भगवती से भासिय भैलनिएक बलि, और सखती उपलभ भए हुपत करान देखि बलि । निग्रह प्रभाव ।

नरेलक फली के कहिहवाक से नारी साक्षात् भववतिरक भली बुझि पवनेक । ओ प्रसाद भए कहिहवाक पापर पावे प्रभाव कएलक तथा ओकर नारीक रूप में साकुबक कोमल भावना उरभ भए भेलैक । कयदा हुपक संग मिलि ओकरा ओकर के फलकाम तथा धर्म के रचित कए सागल । ओकर सहृदयता और स्वारक मानना नारीकभावक और विराट रूप के और अधिक व्यापक अनीयक अकारा द्वारा नारी सुख, पालन और कल्याणक अनुभव पुन से सम्मिलित होइत । ओ भली

बीचमक बननी बनबाक अहिम्माक आशीर्षक एव भिन्नार्थ अर्थ हौं बीतबीत हौं
बल किन्तु कहित्वा ! जोकर मानुष, स्त्रीत्व और बीचन बोधर केहेन करत हौं
जोकरा कनेको हा जका नहि कर्तव्य ।

मानस-घात भेल । अहिम्मा कने दिन बन भोबर कालक तथा करेह के
कहए लागलहै—धात ! बहिन तँ पुरेहेलिन बिक करत भाषक बोटीक तँ बाब
रहेत छैक किन्तु जोकर सम्पत्ति मे जोकरा कोनहुन अधिकार नहि रहैक । तदुपराव
भाषक जोलए आशीर्षक बहिन केँ एहू सेहो तँ छीक नहि होइत ते परत सम्पत्ति
बिक । महर मे बेसी दिन रहला तँ नारी केँ कमभक्त रोको नयेव जैक ।

अहिम्माक उडेगल करत केँ कुनि मोत सम्पत्ति भए बाबत—“हे बहिन !
जोह अहाँ गुना किएक बाजैत छिहैक । की निर्धन केँ भाव बनबाक अधिकार नहि
छैक ? की बहिन-भाषक सम्बन्धी मे सम्पत्तिक बाब नयेव छैक ? हे बहिन ! ते बाबत
सध्य भाव-बहिनक पवित्र-वादन भिन्नार्थ जेम नहि रहैत तँ अरत हौं सत्य कहे
भए बाबत और सम्पूर्ण पणत मे दनापतरक साम्राज्य प्रसारित होइत । केवल एहि
मे तँ सत्य, धर्ममे और जेव निराश्रयन जेक और बाकी मरुत तँ अरतक बाब
पिहीक मे कनेको बर्षा जेव कि चुराए सामन । अहाँ एना नहि जानू । हमर अधिक
कमन जेव होयत, नहि लिखि केँ विश्राम होयत तँ जो कलहि जहाँ केँ हमर जोकर
हौं नए बाबत ।

नरैकक कर अहिम्माक नारी—हृदयक कोयल भावन केँ कगार जोकरा
जन्तु-कारकेँ संकल तँ कपलक किन्तु केहेन भोबर कलक सँ विद्याता जोकर अवधि
केँ लिखमयिन । हुनकर लिखल मेक केँ के वसतनैक । जोक प्रोनेस तँ किछु बलि और
होयत छैक किछु बाब । अहिन्तो तँ बपना परि मोकि होबने छल किन्तु मेनेक की ?
के अर्जत अलि जोकर नेना केँ की होयत ? समाज तँ जोकरा नलको दूजि लिनेक
दुष्टिमे देखातैक । जोकरा बागोराक तर-डेकन नहि छैक जोकरा बीबिए केँ की
हेतैक ? जो तँ नरकक कीड़ा भए मरक मे पहुँच रहतैक जकरा हेतु मरकक मोह
तँ छैक । किमी जोकरा खंडि कोहि नरक मे छैक नरकक सनाय सदृशक
मेन ? एहि घण्टे जो निवार मे जोन भए सोचिहै छल कि मरेकक पत्नी नेना केँ
हेन-करत कए जोकरा जोलए जेन आएत । नेना मितुसेव जोकरा कोर तँ नाबक

कोर से वृक्षों काटकर लाना अहिष्णा के प्रतीक थे और वे भी ओकरा कहते हुए वे प्रति पायक सपरु बलि ही बेदीक ।

दिन बीतता । भगवान् आकर दिन भरि चलतक पान, प्रवन्ध, लवार्थ, मोह और मोम के देखे हुआ भद्र अवन सपस्त प्रकाश के अवन में एवेंटि समुद्र के अवनक निमित्त उचल खाना । अहिष्णा के एहि में भीक बड़ी और अवन सोयन कान में डेढ़का । नरेसक परती घर से कलह बान लोचन गेन दल । अहिष्णा अवन सुखे नेवा के कोर से छठीनक भा दूत एति से घर से बाहर भेज लाना दरनका कोलीक कान्ती मंदिर से पहुँचल । बगरीकी के अवन कयलक । अवन कतीनक कयक हेतु को अवनसाप कयलक और मोहि पावन प्रायश्चित्त करवाक हेतु भी बाहुवी से आर्चना कयलक ।

औ अवन सकल नेत्र से अवनक चोक के, भीम यवन के, अवन अवीर के और अर्धमान के एकवेति बड़ स्नेह से निहालक और अवन नेवा के कोर से अवन अवनक एवति कारण लवार्थ से ओकरा औरन से गति सेवकक बाद ओ ओकरादि से अवन अवन सुपुर्द करल ।

नरेसक परती घर आएन । अहिष्णा और नेवा के अहि रेशि बावी पुन से कुची गए ओ अवन पति के एहि वसंवक सुवन । गए रुख । वरमांग कोली के से दोकति किन्तु जानल ओ ओकरा पहुँचल तावति अहिष्णा अवन नेवाक संगति संग से कृदि अवन लए लेनक । तावन मयक जगदल गंगाक अवनक अवनकार ओकरा एक वेर अवन केकि नरेसक पानी के ओकर अमित स्नेहा रूप से वरमांग कयीनक से विमोचक स्नेह से अवन छठी बीटि रहल दल । नरेसक हुआ गए से ही सीकन से ओकर बावन किन्तु ओकर से तावन भाव स्पृष्टिगता गेन पनक । ओ कनक अवन अहिष्णा के ओकरा दिनाञ्जलि देनक बधा ओकर बावनक आनिक हेतु अवनक बाद गए अहिष्णाक गार से मुक्त गेन ।